इस तरह 1757-1947 के बीच एक नवीन उत्पादन प्रणाली का अभ्युदय हुआ जिसे हम औपनिवेशिक उत्पादन प्रणाली कहते है। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या पुरे औपनिवेशिक काल में उपनिवेशवाद का एक ही रूप रहता है या इसके स्वरूप में क्रमशः परिवर्तन आता है। निरंतरता एवं परिवर्तन के इन तत्वो के आकलन के आधार पर औपनिवेशिक शोषण के तीन चरण बताये गये है:

- वाणिज्यवाद चरण ⇒ 1757 - 1813
  मर्केन्टाइल स्टेज ⇒ व्यापारिक एकाधिपत्य द्वारा शोषण
- मुक्त व्यापार का चरण ⇒ 1813 - 60
  = मुक्त व्यापार एवं असमान विनिमय द्वारा शोषण
- वित्त साम्राज्यवाद द्वारा शोषण ⇒ 1860 - 1947
  ⇒ पूँजी के निर्यात द्वारा धन का निष्कासन

परन्तु, अलग-2 चरणों के होने का अर्थ यह नहीं, कि हर एक अगले चरण में पहले से होनेवाला शोषण समाप्त हो जाता है बल्कि वास्तव में हम उसकी स्पष्ट निरंतरता देखते है।

वाणिज्यवाद का चरण
1757 - 1813 ई०

औपनिवेशिक उत्पादन प्रणाली द्वारा शोषण के पहले चरण को हम वाणिज्यवादी

शोषण की व्यवस्था कहते है। शोषण की यह व्यवस्था एक तरफ तो व्यापारिक एकाधिपत्य को तो दूसरी तरफ छूट को जन्म देती है। यह व्यापारिक एकाधिपत्य क्या है, यहाँ हम जिस व्यापार की बात कर रहे है वह भारत में E.I.C. द्वारा विश्व बाजार में किया गया व्यापार है। जबकि व्यापारिक एकाधिपत्य (Monopoly trade) द्वारा शोषण से हमारा तात्पर्य व्यापार के दोनो पक्ष अर्थात् क्रय एवं विक्रय पक्ष पर E.I.C. के द्वारा एकाधिपत्य की स्थापना करने से है। अर्थात् एक व्यापारिक कंपनी के रूप में E.I.C. अपने अभांश का महत्तम विस्तार तभी कर सकती थी, जब उसके द्वारा भारत से सामान कम से कम कीमत पर खरीदे जाये और विश्व बाजार में उसे अधिकतम कीमत पर बेचा जाये। परन्तु इस एकाधिपत्य की स्थापना के मार्ग में दो तरह की बाधाएँ थी;